Vol 7 Issue 3 Dec 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Sanjeev Kumar Mishra

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2017

कार्ल ऑस्कर सॉवर का भौगालिक क्षेत्र में योगदान
(CARL OSCAR SAUR, 1889-1975)

अंजना
सहायक आचार्य (भूगोल), राजकीय महिला महाविद्यालय, रेवाड़ी (हरियाणा).

प्रस्तावनाः–

कार्ल सावर का जन्म संयुक्त राज्य अमेरिका के मिसौरी प्रान्त के वारेण्टन नगर में 24 दिसम्बर सन् 1889 को हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा जर्मनी में हुई तथा उच्च शिक्षा यू0 एस0 ए0 में वारेण्टन नगर के केन्द्रीय महाविद्यालय में हुई। उन्होंने सन् 1915 में महान भूगोलवेता प्रो0 सेलिसबरी के निर्देशन में शिकगों विश्वविद्यालय से डाक्टरेट (पीएच्) की उपाधि प्राप्त की। सर्वप्रथम वह मिशीगन विश्वविद्यालय में भूगोल के व्याख्याता नियुक्त हुए। यहां इन्होंने मिशीगन राज्य की भूमि के अर्थिक सर्वेक्षण को पूरा किया तथा यहां की भूमि उपयोग की मानचित्रावली अपने निर्देशन में तैयार करावाई। इस कार्य से इनको बहुत अधिक प्रसिद्धी प्राप्त हुई।

सन् 1923 में इनको केलिफोर्निया विश्वविद्यालय बर्कले में भूगोल का प्रोफेसर एवं अध्यक्ष नियुक्त किया गया। यहां पर वे सन् 1957 में अपनी सेवानिवृति तक कार्यरत रहे। इसके बाद इनकी प्रतिभा को देखते हुए इस विश्वविद्यालय ने इनको जीवन पर्यन्त राष्ट्रय मानद् प्रोफेसर (च्तवमिवत म्उपतमजने), नियुक्त किया गया। इसके बाद वे सन् 1970 तक बर्कले में ही रहे तथा भूगोल के विकाश को काफी प्रभावित किया।

कार्ल आस्कर सवार के प्रमुख ग्रन्थ :–

1. ओजार्क उच्च भूमि (Ozark Highlands-A Study in Upland Geography), 1920,
2. भू–दृश्य का आकृति विज्ञान (Morphology of Landscape)–1925
3. उत्तर पश्चिम मेक्सिको की आदिम जनसंख्या, 1935 (Aboriginal Population of North-West Mexico)
4. सांस्कृतिक भूगोल (Cultural Geography), 1947
5. कृषि–उसके उद्गम प्रदेश एवं उसका वितरण, (Agriculture-Ist Origin and Dispersal)
6. स्थल एवं जीवन (Land & Life), 1963
7. जैविक विश्व का मानवीय उपयोग (Human Uses of Organic World),
8. प्रादेशिक भूगोल पर तीन लेख (Three Papers in Regional Georgaphy)
9. भूगोल के विधि तंत्र पर 'Persuits of Learning' नामक शीर्षक से लिए गये चार महत्वपूर्ण लेख

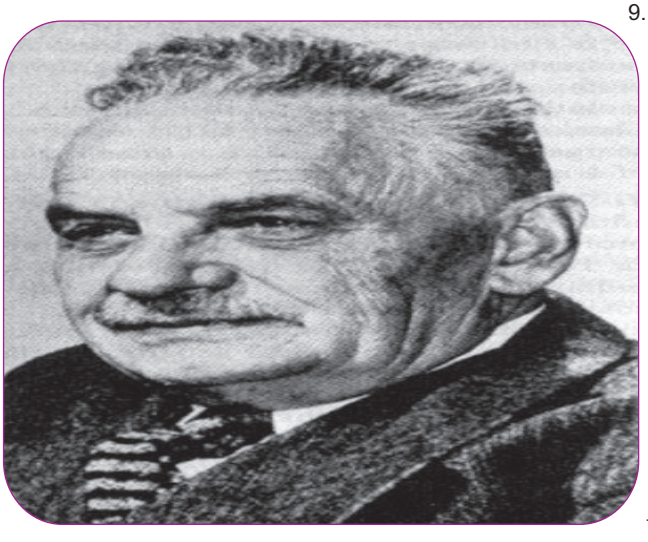

भौगोलिक योगदान (Georgraphical Contribution)

कार्ल ऑस्कर सवार (Carl Oscar Saur) की विचार धार के प्रमुख तथ्य निम्नलिखित थे :–

भू–दृश्य विचारक (Landscape thinker) :– सन् 1925 में सावर द्वारा लिखे गये लेख ''भू–दृश्य स्वरूप'' (Morpholohy of landscape) का संयुक्त राज्य अमेरिका में भूगोल के विकास में गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने यह विख्यात लेख अपने प्रभाव को अच्छी तरह से स्पष्ट करने तथा व्यापक बनाने के लिए प्रस्तुत किया। उन्होनें भू–दृश्य विचार धार की व्याख्या करते हुए उसे जर्मन भाषा के लेण्डशाफ्ट का पर्याय माना। सावर का विचार था कि किसी क्षेत्र की दृश्य भूमि के निमार्ण में केवल प्राकृतिक तत्वों के प्रभाव को महत्व नहीं दिया जा सकता बल्कि मानव भी भू–दृश्य

के निमार्ण में सशक्त माध्यम है। मानव अपने बोधिक ज्ञान, संस्कृति एवं समाज की व्यवस्था के अनुसार भौतिक एवं जैविक (Biotic) लक्षणों को प्रभावित करता है तथा उन्हें अपने अनुरूप बनाने का यथा सम्भव प्रयास करके सांस्कृतिक दृश्यभूमि का निमार्ण करता है। कार्ल ऑस्कर सवार के अनुसार भू–दृश्य अध्ययन के अन्तर्गत प्राकृतिक, जैविक तथा मानवीय कारकों को सम्मिलित किया जाता है। जब मानव अपनी सम्पूर्ण उपलब्ध तकनीक के द्वारा प्राकृतिक भू–दृश्य को प्रभावित करते हुए जो भी स्वरूप विकसित करता है वह सांस्कृतिक भू–दृश्य कहलाता है। कार्ल सॉवर ने भू–दृश्य के अन्तर्गत मानव पर्यावरण तथा भौतिक पर्यावरण के लक्षणों को सम्मिलित किया है। इस प्रकार भू–दृश्य शब्द प्रदेश शब्द का पयार्य माना गया है।

2. क्षेत्रीय विभिन्नता की संकल्पना (Concept of Areal Differentiation) :– सन् 1920 के दशक में सॉवर ने बार–बार क्षेत्रीय विभिन्नता शब्द का प्रयोग किया था। उन्होंने हैटनर के क्षेत्रिय विवरण विज्ञान (Chorological science) को सही ठहराया जिसमें क्षेत्रों का अध्ययन उनकी विभिन्नताओं ओर स्थानिक सम्बन्धों के आधार पर किया जाता है। उनके अनुसार भूगोल पृथ्वी के क्षेत्रों का ज्ञान है ओर दूसरे से भिन्न होते हैं। विश्व में क्षेत्रीय विभिन्नताओं के अन्तर्गत धरातल, जलवायु, मिट्टी, वनस्पति, खनिल पदार्थ जीव जन्तु आदि तत्वों का अध्ययन किया जाता है। उपरोक्त तत्वों की विभिन्नता के कारण ही मानव के सांस्कृतिक पर्यावरण में भी भिन्नताएं उत्पन्न हो जाती है।

3. सम्भववादी विचारक :– कार्ल सावर सम्भववादी विचारधारा का समर्थक था। उन्होंने अपने लेख 'The agency of man on the earth' में उदाहरण सहित समझाया कि मानव प्रागैतिहासिक काल से ही प्राकृतिक धरातल को परिवर्तित करता रहा है। भौतिक पर्यावरण मानव के लिए संभावनाएं एवं चुनाव की स्थिति प्रस्तुत करते हैं। मानव अपनी बुद्धी के बल पर अपनी छाँट के द्वारा उन संभावनाओं का उपयोग कर सकता है। मानव अपनी बोधिक क्षमता तथा कार्यकुशलता के आधार पर विज्ञान एवं तकनीकी की सहायता से प्राकृतिक शक्तियों पर विजय पाने की संभावनाएं खोजता है। उदाहरण के लिए मानव ने प्राकृतिक खनिजों का उपयोग करके औद्योगिक विकास किया, नगरों और परिवहन मार्गों का विकास किया है। मानव तकनीकी व वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर रेगिस्तान को हरा–भरा कर सकता है ओर एन्टार्कटिका जैसे ठण्डे प्रदेश में तापक द्वारा मकान गर्म कर सकता है। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में नहरों या कुओं से सिंचाई करके कृषि फसलें उत्पन्न कर सकता है। सॉवर के अनुसार मानव ने प्राकृतिक बाधाओं को हमेशा ही अनुकूलताओं में परिवर्तित किया है। आज मानव प्राकुतिक संसाधनों का उपयोग मानव कल्याण हेतू पूर्व निश्चित योजना के अनुसार कर रहा है।

4. ऐतिहासिक भूगोल की व्याख्या :– कार्ल सॉवर संयुक्त राज्य अमेरिका के विख्यात ऐतिहासिक भूगोलवेता बने। इतिहासकार एच0 ई0 बोटन, (H.E. Botton) ए. एल. क्रोबर तथा सॉवर ने मिलकर लेटिन अमेरिका में दृश्यभूमि के विकास में ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि के निर्णायक कारकों के प्रभाव का वर्णन किया है। उन्होंने ऐतिहासिक भूगोल का वर्तमान दृष्यभूमि से सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया है। सावर के अनुसार क्षेत्रों के परिवर्तन के स्वरूप व प्रकृतिक को समझने के लिए किसी क्षेत्र या प्रदेश की भूतकाल की सम्भावित स्थिति को समझने के लिए इतिहास एवं पुरातत्व विज्ञानों की जानकारी अत्यावश्यक है। ऐतिहासिक घटनाओं को भी भूगोल का अंग मानकर उसकी व्याख्या की जानी चाहिए। अतः सावर ने प्राचीन भौगोलिक घटनाओं के काल क्रमानुसार (CHRONOLOGICAL) अध्ययन को ऐतिहासिक भूगोल कहा। ऐतिहासिक भूगोल सन् 1932 से 1966 तक उन्होंने से सम्बन्धित अनेक शोध प्रपत्र Annals of American Association of Geographer में प्रकाशित किए।

सावर के ऐतिहासिक भूगोल की अनेक भूगोलवेताओं ने आलोचना की कि भूगोल में क्षेत्रों के वर्तमान स्वरूपों का अध्ययन अनेक लक्षणों व विश्लेषणों के आधार पर किया जाना चाहिए न कि प्राचीन काल से वर्तमान तक के काल–क्रमानुसार अध्ययन होना चाहिए।

भौगोलिक वर्णन के लिए एक भूगोलवता को इतिहास का विद्वान भी बनना पड़ेगा। क्या वह ऐसे ऐतिहासिक वर्णन के लिए तैयार हो सकेगा? इस आधार पर भी सावर के ऐतिहासिक भूगोल की विचारधारा की आलोचना की गयी।

5. क्षेत्रीय भूगोल की विचार धारा– सावर ने क्षेत्र के अध्ययन के लिए उसके स्वरूप, संरचना एवं क्रियाशीलता के स्तर को समझने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने क्षेत्र वर्णन के अन्तगर्त उपरोक्त तीनों लक्षणों का विस्तार से वर्णन किया। सावर के अनुसार भौगालिक अध्ययन पर उद्देश्य धरातल के किसी क्षेत्र में उपस्थित वस्तुओं को समझने से है। भूगोल में स्थलमण्डल, जलमण्डल एवं वायुमण्डल का सम्मिलित रूप धरातल माना गया है। भूगोल एक क्षेत्र विवरण विज्ञान है। क्षेत्रीय अध्ययनों में प्रकृति एवं मानव की पारस्परिक प्रति क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। उदाहरण के लिए मरूस्थलीये प्रदेशों में अध्ययन करने से पता चलता है कि वहाँ वर्षा की कमी, वनस्पति की कमी तथा मनुष्यों एवं जीव जन्तुओं का घनत्व कम होता है। इसी प्रकार शीत प्रदेशों का अध्ययन करने से पता लगता है कि वहां भयानक ठंड पड़ती है, लोग बर्फ के घरों में रहते हें। वहां पर जड़ों वाले पौधों की कमी तथा मनुष्यों एवं जीव जन्तुओं की आबादी अत्यन्त विरल है। अतः भूगोल एक क्षेत्र वर्णन विज्ञान है जो पृथ्वी के एक स्थान से दूसरे स्थान तक परिवर्तन स्वरूपों का वर्णन तथा उसकी व्याख्या करता है।

6. भूमि उपयोग सर्वेक्षण एवं मानचित्रांकन :– सावर ने मिशीगन विश्वविद्यालय में भूमि के वर्गीकरण, इसके उपयोग एवं समस्या के समाधान के लिए इनके मानचित्र बनाने तथा उसके व्यवहारिक उपयोग के सुझाव देने के लिए निरन्तर कार्य किया। सन् 1919 में सावर ने कृषि विशेषज्ञों, वन अधिकारियों, मत्स्य पालकों संघ सरकार एवं भूमि संरक्षण (वपस ब्वदेमतअंजपवद) विभाग के सहयोग से भूमि उपयोग प्रोग्राम निश्चित किया जिसमें सभी ने सक्रिय भाग लिया। इस प्रकार कार्लसॉवर ने प्रथम विश्व युद्ध काल एवं उससे पूर्व भूमि उपयोग का एक महत्वपूर्ण कार्य किया जिससे व्यवहारिक भूगोल एवं उनकी समस्याओं का गहराई से अध्ययन किया। उन्होंने भूमि उपयोग के मानचित्र भी तैयार किये।

भौगोलिक अध्ययन विधि :– सावर ने भौगोलिक क्षेत्रों की अध्ययन विधि में बाह्य क्षेत्र अध्ययन तथा क्षेत्र निरीक्षण के व्यवहारिक पक्ष पर विशेष जोर दिया। उन्होंने भूगोल के अध्ययन में मानचित्रों के विकसित तकनीक के उपयोग को पूरा महत्व प्रदान किया। उन्होंने भौगोलिक अध्ययन में तुलनात्मक विधियों को भी अपनाया। उन्होंने भूमि उपयोग के आर्थिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करने के लिए भूमि उपयोग के लिए मानचित्रण विधि (ब्तजवहतंचीपब उमजीवक) का प्रयोग किया। उन्होंने भूगोल के व्यवस्थित विकास एवं नवस्वरूप को समझने के लिए क्रमबद्ध विधि लेजमउंजपब उमजीवक का प्रयोग किया। कार्ल सॉवर संयुक्त राज्य अमेरिका का महान भूगोलवेता था जिसने भूगोल के अध्ययन में व्यापक दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया।

कार्ल सावर ने संयुक्त राज्य अमेरिका में भू–दृश्य विचार धारा तथा क्षेत्र विवरण विज्ञान में सांस्कृतिक भू–दृश्य (ब्नसजनतंस स्ंदकेबंचम) का विस्तृत वर्णन करके सांस्कृतिक भूगोल की आधारशिला रखी। अतः सावर को महान विद्वान, अमेरीकी भूगोल का मार्गदर्शन एवं मानव भूगोलवेता माना जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

Saur, C.O. 1925. 'The Morphology of Landscape'. University of California, Publications in Geography 2 (2) : 19-53

Leighly, J. 1963. Land and Life : A Selection from the writings of Carl Ortwin Sauer. Berkeley : University of California Press, p-6.

James, P.E. and Martin, G. 1981 All Possible Worlds.. A History of Geographical Ideas, John Willy and Sons, New York, 1981.

Williams, M. 1983. "The apple of my eye: Carl Sauer and historical geography". Journal of Historical Geography 9(1):1-28.

अंजना
सहायक आचार्य (भूगोल), राजकीय महिला महाविद्यालय, रेवाड़ी (हरियाणा).

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com